कांटे चुभे दुख पाइए, सेहे न सके लगार।
पर होत है मोहे अचंभा, ए क्यों सेहेसी जम मार।। १५ ।।

इस शरीर में कांटा चुभने का दुःख सहन नहीं होता। महामतिजी कहते हैं कि मैं हैरान हूं कि जीव यम की मार को कैसे सहन करेगा?

इन गफलत के घर में, पड़ेगी बड़ी अगिन।
पीछे लाख चौरासी देह में, जलसी रात और दिन।। १६ ।।

इस धोखेबाज शरीर के घर में बड़ी भयंकर आग लगेगी। उसके बाद चौरासी लाख योनियों में जन्म मरण के चक्कर में दिन-रात जलना होगा।

ए देखी अजाड़ी आंखां खोल के, याकी तो उलटी सनंध।
ए मोहड़ा लगावे मीठड़ा, पीछे पड़िए बड़े फंद।। १७ ।।

मैंने इस वीरान बस्ती जैसे शरीर को विचारकर देखा तो इसकी तो चाल उलटी पायी। यह पहले तो बड़ा मीठा मोह लगाती है और बाद में जंजाल में फंसा देती है।

ए अंधेरी है विकट, जाहेर रची जम जाल।
ए पेहेले देखावे सुख सीतल, पीछे जाले अगिन की झाल।। १८ ।।

यह शरीर अन्धेरी गुफा है। यमराज द्वारा जाल रचा जाता है। पहले तो यह शीतलता और सुख देती है, परन्तु बाद में अग्नि की ज्वाला में जलना पड़ता है।

ए धुतारी को न धीरिए, जो पलटे रंग परवान।
ए विश्व बधे वैराट को, सो भी निगलसी निरवान।। १९ ।।

इस कपटी शरीर पर कभी विश्वास मत करना। यह क्षण-क्षण में दोस्ती तोड़ता है। सारा विश्व जिस वैराट पुरुष नारायण की वन्दना करता है उसे भी एक दिन खा जाता है।

ए सब मोहे इन मोहनी रे, पर इन बांध्यो न कासों मन।
जीव को यातें बिछड़ते, बड़ी लागी दाझ अगिन।। २० ।।

हे जीव! सब लोग शरीर रूपी इस मोहिनी से मोहित होकर अपना समझते हैं, पर यह शरीर किसी को अपना नहीं समझता। इसलिए जीव को इस शरीर से अलग होते समय बहुत कष्ट होता है।

॥ प्रकरण ॥ ३३ ॥ चौपाई ॥ ३९९ ॥

अब देह की तरफ का जवाब

रे जीव जी तुमें लागी दाझ मुझ बिछड़ते, पर मैं खाक हुई तुम बिन।
तुम मोही सों न्यारे भए, मोहे राखी नहीं किन खिन।। १ ।।

अब देह जीव को जवाब देती है।

हे जीवजी! तुम्हें मेरे से अलग होते समय बहुत कष्ट हुआ, परन्तु मैं तो तुम्हारे बिना खाक (मिट्टी हो गई)। तुम जैसे ही मेरे से अलग हुए मुझे किसी ने एक क्षण भी नहीं रखा।

मेरी सेवा जो करते साथीड़े, फूलड़े बिछावते सेज।
सीतल वाए मोहे ढोलते, तिन जारी रेजा रेज।। २ ।।

मेरे साथी (बाल-बच्चे परिवार वाले) जो मेरी सेवा करते थे, फूलों की सेज बिछाते थे, पंखा लेकर शीतल हवा करते थे, उन्होंने मेरे कण-कण को जला दिया।

Nijanand App

एक बाल टूटे दुख पावते, तिन जारी ले खोरने हाथ।
मनुऐं उतारे या बिध, मेरे सोई संगी साथ।। ३ ।।

मेरे अंग का एक बाल टूटने पर जो कभी दुःखी होते थे, उन्होंने ही अपने हाथ से खोरना (बांस) लेकर मुझे जलाकर मेरी खोपड़ी भी फोड़ दी। मेरे संगी साथियों ने इस बुरी तरह से मुझे मन से उतार दिया।

मैं पाले प्यार करके, सो वैरीड़े भए तिन ताल।
मोसों तो राख्यो ए सनमंध, तुमें डारे ले जम जाल।। ४ ।।

जिनको मैंने बड़े प्यार से पाला था वह उसी समय मेरे दुश्मन हो गये। ऐसी रिश्तेदारी उन्होंने मेरे से निभायी। हे जीवजी! तुम्हें यमराज के दूतों के हवाले कर दिया।

तुम बंध पड़े जिन कारने, किया आप सों ज्यों।
मुझ जैसे होए मोहे छेतरी, तुमको दई अगिन त्यों।। ५ ।।

हे जीवजी! तुमने जिनके वास्ते अपने आपको यमराज के बन्धनों में डाला, उन्होंने मुझे अपना बनाकर ठगा और तुम्हें नरक की अग्नि में भेज दिया।

मैं तो आई तुम खातिर, तुम जानी नहीं सुपन।
मैं तो सुपना हो गई, अब दुखड़े देखो चेतन।। ६ ।।

हे जीवजी! मैं तो तुम्हारे वास्ते ही आई थी। तुमने मेरे सपने के मिटने वाले इस शरीर को पहचाना नहीं। मैं तो अब सपना हो गई। हे चेतन! अब तुम कर्मों के हिसाब से दुःखों को भोगो।

पेहेले क्यों न संभारिए, काहे को पड़िए जम फांस।
लाख चौरासी अगनी, तित जलिए न कीजे बास।। ७ ।।

पहले यदि तुम संभल जाते तो यम की फांसी नहीं लगती। अब चौरासी लाख योनियों में रहकर भुगतिये।

मोसों पेहेचान ना कर सके, मेरा मेला तो अधखिन होए।
मेरी तो पेहेचान जाहेर, मुझे जाती देखे सब कोए।। ८ ।।

मेरा साथ तो आधे क्षण का ही होता है जिसे तुम पहचान नहीं सके। मेरी पहचान तो सभी को है क्योंकि सभी मेरी अर्थी जाते देखते हैं।

तुम जान बूझ मोहे मोहीसों, छोड़ के नेहेचल सुख।
मैं तो आई भले अवसर, पर भूले सो पावे दुख।। ९ ।।

तुमने अखण्ड सुख को छोड़कर, जानबूझ कर मुझसे मोह लगाया। मैं तो तुम्हारे भले के लिए आई थी, पर जो इस बात को भूलता है, वही दुःखी होता है।

ए अवसर क्यों भूलिए, जित पाइए सुख अखंड।
या घर बिना सो ना मिले, जो ढूंढ़ फिरो ब्रह्मांड।। १० ।।

ऐसा सुन्दर अवसर, मनुष्य तन को पाकर जिससे अखण्ड सुख मिलता हो, उसे भूलना नहीं चाहिए। इस मनुष्य तन के बिना किसी को भी अखण्ड सुख की प्राप्ति नहीं हुई। चाहे पूरा ब्रह्माण्ड देख लो।

इन पिंड में ब्रह्म दृढ़ किया, नेहेचल सुख परवान।
अब खिन में घर देखिए, ऐसा समे न दीजे जान।। ११ ।।

हे जीव! तुमने इस शरीर में ही परमात्मा है, समझ लिया था और अखण्ड सुख की चाहना की थी। पर वह तो तुम्हारी भूल थी। अब शरीर के होते-होते एक क्षण का जो अवसर मिला है उसे बरबाद मत करो, अर्थात् मेरे रहते-रहते उस पारब्रह्म के अखण्ड सुख की प्राप्ति कर लो।

Nijanand App

और उपाय कई करो, पर पाइए न या घर बिन।
अंदर जागके चेतिए, ए अवसर अधखिन।। १२ ।।

हे जीवजी! और कितने ही उपाय कर लो, पर मनुष्य तन के बिना पारब्रह्म की प्राप्ति नहीं हो सकती। अब अपने अन्दर विचार करके देखो तो मेरा मिलना आधे क्षण का है।

कैसे कर याको खोजिए, ए तो कोहेड़ा आकार।
ए ढूंढ़या बोहोतों कई बिध, पर किनहूं न पाया पार।। १३ ।।

इस तन से किस तरह से पारब्रह्म को खोजा जाए, क्योंकि यह तो धुन्ध की तरह भुलाने वाला है। इसमें बहुतों ने कई तरह से खोज की, पर किसी ने भी पार का ज्ञान नहीं पाया।

बाहेर निकसो तो आप नहीं, और माहें तो नरक के कुंड।
ब्रह्म तो यामें न पाइए, ए क्यों कहिए ब्रह्म घर पिंड।। १४ ।।

हे जीवजी! जब इससे आप निकल जाते हैं तो आपका अपनापन खत्म हो जाता है और जब तन में रहते हो तो तन में नरक के कुण्ड भरे पड़े हैं। पारब्रह्म इस तन के अन्दर नहीं मिलते तो इस पिण्ड को पारब्रह्म का घर कैसे कहा जाए?

पवन जोत सब्दा उठे, नाड़ी चक्र कमल।
इत कैयों कई बिध खोजिया, यामें ब्रह्म नहीं नेहेचल।। १५ ।।

प्राणायाम, नाड़ियों और चक्रों के शोधन से ज्योति और पांच शब्द (निरंजन ओइम्, सोऽहं, शक्ति और रंग) उठते हैं यहां इस तरह कईयों ने कई तरह से खोजा, परन्तु तन के अन्दर अखण्ड पारब्रह्म की प्राप्ति नहीं हुई।

पारब्रह्म क्यों पाइए, ततखिन कीजे उपाए।
कई ढूंढे मांहें बाहेर, बिना सतगुर न लखाए।। १६ ।।

मनुष्य तन जो एक क्षण के लिए है, इसके बिना पारब्रह्म नहीं मिल सकते, इसलिए तुरन्त ही उपाय करो। बहुतों ने पिण्ड के अन्दर और बाहर खोजा, पर उन्होंने भी पाया नहीं। बिना सतगुरु के पारब्रह्म की प्राप्ति नहीं होती।

अब संग कीजे तिन गुर की, खोज के पुरुख पूरन।
सेवा कीजे सब अंगसों, मन कर करम वचन।। १७ ।।

अब पूर्ण ज्ञान देने वाले सतगुरु की खोज कर उनका संग करो और मन, कर्म, वचन और सब अंगों से उनकी सेवा करो।

सो संग कैसे छोड़िए, जो सांचे हैं सतगुर।
उड़ाए सबे अंतर, बताए दियो निज घर।। १८ ।।

जब सच्चे सतगुरु मिल जाएं तो उनको कभी नहीं छोड़ना चाहिए। वह सब संशय मिटाकर अखण्ड घर की पहचान करा देंगे।

पाइए सुध पूरन से, पैंडा बतावें पार।
सब्द जो सारे सूझहीं, सब गम पड़े संसार।। १९ ।।

पूर्ण सतगुरु से पार का रास्ता मिलता है और पारब्रह्म की पहचान होती है। उनसे ही सभी ग्रन्थों की समझ आती है तथा संसार की भी पहचान होती है।

Nijanand App

पांच तत्व पिंड में हुए, सोई तत्व पांच बाहेर।
पांचो आए प्रले मिने, सब हो गयो निराकार।। २० ।।

पांच तत्वों से पिण्ड बना है और उन्हीं पांच तत्वों से ब्रह्माण्ड बना है। यही पांच तत्व ही प्रलय में नष्ट होकर निराकार हो जाते हैं।

ए पांचो देखे विध विध, ए तो नहीं थिर ठाम।
यामें सो कैसे रहे, नेहेचल जाको नाम।। २१ ।।

इन पांचों तत्वों को मैंने तरह-तरह से देखा तो इसमें अखण्ड ठिकाना कहीं नहीं पाया। वह अखण्ड पारब्रह्म मिटने वाले पांच तत्वों में कैसे रह सकता है?

पारब्रह्म जित रेहेत हैं, तित आवे नाहीं काल।
उतपन सब होसी फना, ए तो पांचों ही पंपाल।। २२ ।।

पारब्रह्म जहां रहते हैं, वहां मौत नहीं आती। पांच तत्वों से जो पैदा होते हैं, वह नष्ट हो जाते हैं क्योंकि यह पांचों ही झूठे हैं।

यामें अंतर वासा ब्रह्म का, सो सतगुर दिया बताए।
बिन समझे या ब्रह्म को, और न कोई उपाए।। २३ ।।

इस तन से पारब्रह्म का जो अन्तर है वह कैसे दूर होकर पारब्रह्म को प्राप्त किया जा सकता है, वह सतगुरु ने बताया। बिना इस भेद को समझे पारब्रह्म की प्राप्ति का कोई उपाय नहीं है।

आंकड़ी अंतरजामी की, कबहूं न खोली किन।
आद करके अब लों, खोज थके सब जन।। २४ ।।

उस पारब्रह्म के रहस्य को (राज़ को) आज दिन तक किसी ने नहीं बताया। शुरू से आज तक सब खोज-खोजकर थक गए।

ए पूरन के प्रकास थें, खुल गया अंतर सब।
सो क्यों रेहेवे ढांपिया, प्रगट होसी अब।। २५ ।।

अब सतगुरु के ज्ञान से उस पारब्रह्म के सारे रहस्य खुल गए। जिससे अब वह पारब्रह्म किसी भी तरह छिपे नहीं रहेंगे और जाहिर हो जाएंगे।

जिनको सब कोई खोजहीं, ए खोली आंकड़ी तिन।
तो इत हुई जाहेर, जो कारज है कारन।। २६ ।।

जिस पारब्रह्म को सब कोई खोजता है उसने ही कारज कारण से यहां आकर इस रहस्य को जाहिर किया।

घर ही में न्यारे रहिए, कीजे अंतरमें बास।
तब गुन बस आपे होवहीं, गयो तिमर सब नास।। २७ ।।

हे जीवजी! इस तन में रहते हुए चित्त को पारब्रह्म में लगाए रखो। तब सभी गुण, अंग, इन्द्रियां वश में हो जाएंगी और अन्धकार मिट जाएगा।

या बिध मेला पिउ का, पीछे न्यारे नहीं रैन दिन।
जल में न्हाइए कोरे रहिए, जागिए माहें सुपन।। २८ ।।

इस तरह से पिया का मिलना सरल और सुगम है। फिर कभी भी (रात हो या दिन) न्यारे (अलग) नहीं होंगे। जिस तरह से कमल जल में होता है पर जल उसके पत्ते पर नहीं ठहरता, उसी तरह तुम इस माया के संसार में रहकर माया से अलग हो जाओगे।

Nijanand App

या सुपन तें सुख उपज्यो, जो जाग के कीजे विचार।
आतम भेली परआतमा, सुपन भेलो संसार।। २९ ।।

यदि हम सावचेत (सावधान) होकर विचार करें तो इस सपने के तन से ही अखण्ड सुख मिलता है। तब आत्मा परआतम से मिल जाती है और सपने का शरीर सपने में समा जाता है।

इन बिध लाहा लीजिए, अनमिलती का रे यों।
सुखड़ा दिया धुतारिए, याको बुरी कहिए क्यों।। ३० ।।

हे जीवजी! इस तरह से इस क्षण भंगुर तन का लाभ ले लो। इस झूठे तन से जब अखण्ड सुख मिलता है, तो इस तन को बुरा नहीं कहना चाहिए।

जो सुख याथें उपज्यो, सो कह्यो न किनहूं जाए।
पात्र होए पूरा प्रेम का, तिन का रस ताही में समाए।। ३१ ।।

इस तन से जो अखण्ड सुख मिलता है उसका वर्णन कोई नहीं कर सकता। जो प्रेम के पात्र (ब्रह्मसृष्टियां) होंगी वही इस रस को ग्रहण कर सकेंगी।

ए वतनी सों गुझ कीजिए, जो खैंचे तरफ वतन।
प्रेमै में भीगे रहिए, पिउ सों आनंद घन।। ३२ ।।

अपने घर की बातें ब्रह्मसृष्टियों से ही करें। वह हमें परमधाम की तरफ खीचेंगी। सदा उसके प्रेम में मग्न होकर धनी से अखण्ड सुख प्राप्त करें।

महामत पिया संग विलसहीं, सुख अखंड इन पर।
धंन धंन प्रपंच ए हुआ, धंन धंन सो या मन्दिर।। ३३ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मैं इसी तरह से संसार में रहकर प्रीतम के अखण्ड विलास का सुख लेती हूं और इस संसार के तन को धन्य-धन्य कहती हूं, क्योंकि इस तन से प्रीतम मिले।

।। प्रकरण ।। ३४ ।। चौपाई ।। ४३२ ।।

राग सिंधुड़ा

नोट—यह छः प्रकरण मन्दसौर में उदयपुर के सुन्दरसाथ की दुःखी हालत सुनकर उतरे हैं।

वालो विरह रस भीनों रंग विरहमां रमाड़तो, वासना रुदन करे जल धार।
आप ओलखावी अलगो थयो अमथी, जे कोई हुती तामसियों सिरदार।। १ ।।

हे मेरे वालाजी! हम विरह के रस में डूबे हुए हैं और तुम हमें विरह का खेल दिखला रहे हो। इसमें हम आपकी आत्माएं आसूं बहा-बहाकर रो रही हैं। अपनी पहचान कराकर हम तामसी सखियों से आप अलग हो गए।

कलकली कामनी वदन विलखाविया, विश्वमां वरतियो हा हा कार।
उदमाद अटपटा अंग थी टालीने, माननी सहुए मनावियो हार।। २ ।।

हम आपकी अंगनाओं के बिलख-बिलखकर रोने की आवाज से संसार में हाहाकार मचा हुआ है। आपने हमारे अंग से प्रेम का अटपटा पागलपन हटाकर हार मनवा ली है।

पतिव्रता पल अंग थाए नहीं अलगियो, न कांई जारवंतियो विना जार।
पात्रियो पिउ थकी अमें जे अभागणियों, रहियो अंग दाग लगावन हार।। ३ ।।

संसार में पतिव्रता स्त्री अपने पति से एक पल के लिए भी अलग नहीं होती और यार वाली स्त्री अपने यार से अलग नहीं होती है, परन्तु हम ही ऐसी अभागिनी हैं कि हम पतिव्रता होने पर भी यहां अपने धनी से जुदा (अलग) हैं और अपने ऊपर कलंक लगवा रही हैं।

Nijanand App